पुस्तक-समीक्षा

वैश्विक रचनाकारों की कर्मभूमि का दस्तावेज

• डॉ. हेमराज कौशिक

सुधा ओम ढींगरा अमेरिका की प्रवासी हिंदी लेखिका हैं। वे हिंदी प्रचारिणी सभा कनाडा और उत्तरी अमेरिका की त्रैमासिक पत्रिका 'हिंदी चेतना' की सम्पादक हैं तथा स्वयं एक कथाकार और कवयित्री हैं। उनके तीन कहानी संग्रह 'कमरा नं. 103', 'कौन सी ज़मीन' तथा 'बसूली' और तीन कविता संग्रह 'धूप में रूठी चांदनी', 'तलाश पहचान की' तथा 'सफर यादों का' प्रकाशित हैं। अनुवाद और साक्षात्कार को लेकर भी उन्होंने कृतियों का सृजन किया है तथा अमेरिका के प्रवासी कवियों का संकलन 'मेरा दावा है' शीर्षक से संपादित किया है। उनकी सद्य प्रकाशित कृति 'वैश्विक रचना : कुछ मूलभूत जिज्ञासाएं' हैं जिसमें चौबीस हिंदी साहित्य-सर्जकों के साक्षात्कार हैं। इनमें से तेईस साक्षात्कार स्वयं सुधा ओम ढींगरा ने लिए हैं और अंतिम साक्षात्कार कंचन सिंह चौहान ने सुधा जी का लिया है। लेखिका की इन साक्षात्कारों की प्रेरणा 'गर्भनाल' पत्रिका रही है। इस संदर्भ में वे कहती हैं- "'गर्भनाल' पत्रिका में मेरा हर माह विश्व के साहित्यकारों के साथ बातचीत का स्तम्भ था, जो लगभग चार वर्ष तक चला। इस पुस्तक के लिए तेईस साहित्यकारों के साक्षात्कार उन्हीं में से चुने गए हैं।" पत्रकारिता जगत् में प्रवेश करते ही लेखिका की साक्षात्कार विधा से साहित्यिक यात्रा का समारम्भ हुआ। विदेशों और सुदूर स्थित लेखकों के साक्षात्कार के लिए उन्होंने फोन, ऑनलाइन और स्काइप जैसी आधुनिक तकनीकों और उपकरणों का उपयोग किया है। इस पुस्तक में सात देशों के हिंदी लेखकों के साक्षात्कार लिए गए हैं। अमेरिका से वेद प्रकाश बटुक, सुषमवेदी, सुदर्शन प्रियदर्शिनी, अनिल प्रभा कुमार, पुष्पा सक्सेना, डॉ. मृदुल कीर्ति, रेखा मैत्र, देवी नागरानी, शशि पाधा, राकेश खंडेलवाल और अनिता कपूर के साक्षात्कारों की प्रस्तुति है। कनाडा से प्रो. हरिशंकर ओदश, श्याम त्रिपाठी, ब्रिटेन से तेजेंद्र शर्मा, उषा राजे सक्सेना, अचला शर्मा, दिव्या माथुर, खाड़ी देशों से कृष्ण बिहारी, पूर्णिमा वर्मन, डेनमार्क से अर्चना पैन्यूली, नार्वे से सुरेश शुक्ल 'शरर आलोक' भारत से एस.आर. हरनोट और रामेश्वर काम्बोज 'हिमांशु' के साक्षात्कार सुधा जी ने लिए हैं। अमेरिका में रह रही सुधा ओम ढींगरा का साक्षात्कार कृति के अंत में कंचन सिंह चौहान द्वारा लिया गया है। इन साक्षात्कारों के माध्यम से वैश्विक रचनाकारों के व्यक्तित्व, कृतित्व और साहित्य विषयक चिंतन को बखूबी समझा जा सकता है। वैश्विक रचनाकारों को एक स्थान पर प्रस्तुत कर समकालीन प्रवासी लेखन की समस्याओं और चुनौतियों को सामने लाया है। प्रत्येक देश के प्रवासी हिंदी लेखकों का परिवेश भिन्न होता है। अतः संवेदनाभूमि का स्वरूप भी भिन्न होता है। उनके साहित्य में नया परिवेश और परिस्थितियां अभिव्यक्ति का माध्यम बनती हैं। प्रवासी रचनाकारों की रचनाओं में एक सांस्कृतिक आघात व्यंजित होता है। मूल देश से दूर प्रवास में मन में नाना द्वंद्व अंतर्द्वंद्व, जीवन मूल्यों की टकराहट की अनुभूति होती है, जो रचना की विषय वस्तु बनती है। सुधा जी द्वारा लिए गए इन साक्षात्कारों में यह तथ्य समान रूप में उभरकर सामने आया है। इन साक्षात्कारों के माध्यम से लेखिका ने विश्व साहित्यकारों से संवाद करके वैश्विक रचनाशीलता की मानसिकता, उनकी संवेदना के विविध धरातल, रचना प्रक्रिया, रचना की प्रेरणा, प्रेरक रचनांकार आदि विविध पक्ष सामने आए हैं। प्रवासी हिंदी रचनाकार, प्रवासी हिंदी साहित्य सृजन सम्बंधी अनेक प्रश्नों को लेखिका ने उठाया है। प्रवासी लेखक और प्रवासी साहित्य जैसी संज्ञाएं क्या उपयुक्त हैं, इससे जुड़े मुद्दों को भी इन साक्षात्कारों में उठाया है। बहुत से लेखक इस संज्ञा को उपयुक्त नहीं समझते, कुछ लेखकों को इसमें किसी प्रकार की आपत्ति नज़र नहीं आती। स्वयं प्रवासी लेखकों ने प्रवासी लेखकों के संकलन निकाले हैं। तेजेंद्र शर्मा का कहना है, "सच्चाई यह है कि विदेशों में बसे लेखक प्रवासी हैं और लेखक तो वे हैं ही। अतः उन्हें प्रवासी लेखक कहने में कोई हर्ज नहीं है। आज सरकार ने प्रवासी मंत्रालय बना दिया है, प्रवासी दिवस जनवरी में मनाया जाता है, विश्वविद्यालयों में प्रवासी साहित्य विभाग खोल दिए गए हैं,

प्रवासी साहित्य पढ़ाया जा रहा है और उस पर शोध हो रहा है।"

साक्षात्कार अत्यंत लोकप्रिय और उपयोगी विधा है। पाठक साक्षात्कारों को पढ़ते हुए लेखक से निकटता अनुभव करता है। साक्षात्कार की सफलता और सार्थकता साक्षात्कार लेखक की प्रतिभा, संवाद करने की दक्षता मनोविज्ञान की गहरी पैठ, वाणी माधुर्य और सौंदर्य पर अवलम्बित होती है। सुधा ओम ढींगरा द्वारा लिए गए साक्षात्कारों में ये गुण विद्यमान हैं। पुस्तक के प्रारम्भ में सुशील सिद्धार्थ ने 'संवादधर्मिता साक्षात्कार का सौंदर्य है' में सुधा ढींगरा की इन विशेषताओं की ओर संकेत किया है।

सुधा ओम ढींगरा ने साक्षात्कार के लिए प्रश्नों का कोई निर्धारित प्रारूप तैयार नहीं किया है, बल्कि प्रत्येक रचनाकार के व्यक्तित्व और कृतित्व की गहरी समझ के आधार, उनके प्रश्नों का स्वरूप और अनुक्रम विविधमुखी रहा है। यही कारण है कि बहुत से साक्षात्कार विस्तृत और कुछ सीमित रहे हैं। पूर्णिमा वर्मन के साक्षात्कार में हिंदी में इंटरनेट की भूमिका पर बल है और एस.आर. हरनोट से लिए गए साक्षात्कार में रचना के सामाजिक आधार पर बल है। कृष्ण बिहारी कवि, कथाकार, नाट्य लेखक और पत्रकार हैं। उनसे की गई बातचीत में उनके कृतित्व के विविध पक्षों का उद्घाटन है। उनका लेखन दूसरे प्रवासी लेखकों से किन अर्थों में भिन्न है या वे लेखक कैसे बने, ऐसे प्रश्न उनके रचनाकर्म से सम्बंध रखते हैं। वेद प्रकाश 'बटुक' से लिए साक्षात्कार में अमेरिका में हिंदी की स्थिति, साहित्य में उसका स्थान और साहित्य के मूल्यांकन को प्रमुख रूप में उभारा है। सुषम बेदी अमेरिका के उन रचनाकारों में से एक हैं जिन्होंने कविता, उपन्यास, कहानी आदि विधाओं में सृजन किया है। अपने लेखन के विषयों के सम्बंध में वे कहती हैं, "मुझे मानवीय रिश्तों, रिश्तों के बीच व्यक्ति की अपनी पहचान, मानव मन की गुत्थियां, उलझनों को समझने, उनकी पड़ताल में गहरे उतरते चले जाने में हमेशा रुचि रही है। उनका मानना है कि लेखक की पहचान एक देश से जोड़ी जाए, यह जरूरी नहीं। सुदर्शन प्रियदर्शिनी भारत और विदेशों में महिला साहित्यकारों के लेखन में भिन्नता के सम्बंध में कहती हैं "विदेशों में रहने वाली महिलाएं कल्पनाओं के पंखों पर नहीं उतरती। स्वप्नों में नहीं जीती क्योंकि स्वप्नों और वास्तविकता में विराट भिन्नता है।" अनिल प्रभा कुमार अपनी रचना प्रक्रिया के सम्बंध में कहती हैं "आकार, घटना बाह्य चाहे हों पर जब मैं परकाया में प्रविष्ट होकर सब अनुभव जीती हूं, तभी लिख पाती हूं। एक प्रेरणा का स्रोत या केंद्र-बिंदु कहीं से उठता है और फिर वह मेरी ही कोख में पनपता है।" कथाकार पुष्पा सक्सेना स्त्री विमर्श और स्त्री आंदोलन के सम्बंध में पूछे जाने पर कहती हैं, "सरल शब्दों में नारी अस्मिता के लिए सैद्धांतिक या वैचारिक चिंतन तथा स्त्री-आंदोलन को व्यावहारिक अथवा क्रियात्मक प्रयास के रूप में देखती हूं।" डॉ. मृदुला कीर्ति अपने साक्षात्कार में कहती हैं, "दिव्य काव्य कृपा साध्य होता है, श्रम साध्य नहीं।" रेखा मैत्र के दस कविता संग्रह प्रकाशित हैं। उनके साक्षात्कार में कविता से जुड़े प्रश्न ही प्रमुख रूप में आधार रहे हैं। वे कविता को अनायास सहज अभिव्यक्ति मानती हैं। देवी नागरानी से साक्षात्कार लेते हुए सुधा जी ने ग़ज़ल के प्रति आकर्षण, प्रेरणा, हिंदी-उर्दू ग़ज़ल की भिन्नता, ग़ज़ल का मूल स्वर और मीटर आदि पर बातचीत की है। देवी नागरानी ग़ज़ल के सम्बंध में कहती हैं, "ग़ज़ल अब हमारी तहज़ीब की आबरू बन गई है।" शशि पाधा भी मूलतः कवयित्री हैं। उन्होंने गीत, नवगीत, दोहा हाइकू आदि विविध काव्य रूपों में सृजन किया है। साक्षात्कार लेखिका ने उनकी काव्य कृतियों की राह से गुज़रते हुए उनकी रचना प्रक्रिया, छंदबद्ध और छंदमुक्त कविता की भिन्नता, रचना का मूल स्वर, रचनाशीलता में पाठक और समाज की भूमिका सम्बंधी सवाल उठाए हैं।

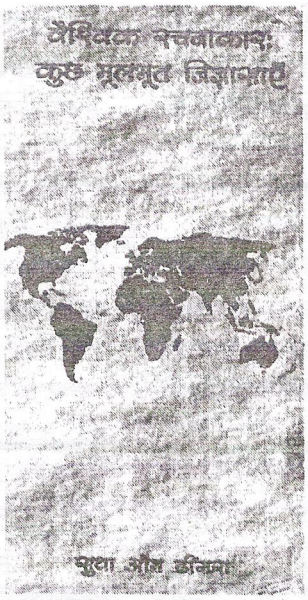

सुधा जी ने अमेरिका के कवि सम्मेलनों में गीतों के बादशाह कहलाए जाने वाले कवि खंडेलवाल जी से साक्षात्कार में आज की कविता और रचनात्मक परिदृश्य सम्बंधी अनेक प्रश्न पूछे हैं। आज की कविता में यथार्थ के नाम पर बौद्धिकता को वे अस्वीकार करते हैं। अपनी ज़मीन से जुड़कर की जाने वाली कविता मन की जिन गहराइयों में पहुंचती है, उसकी कल्पना तथाकथित बौद्धिक स्तर की कविता में नहीं हो सकती।" अनिता कपूर से संवाद प्रमुख रूप में नारी स्वातंत्र्य, स्त्री विमर्श पर केंद्रित रहा है। प्रो. हरिशंकर आदेश के साक्षात्कार में हिंदी की वैश्विक स्तर पर स्थिति और प्रवासी लेखकों के प्रति दृष्टिकोण प्रकट हुआ है। श्याम त्रिपाठी ने विदेश में रहते हुए हिंदी के पठन-पाठन और सृजनशीलता को विकसित करने में महत्त्वपूर्ण योग दिया है। सुधा जी ने उनसे साक्षात्कार में उनके द्वारा संचालित 'हिंदी चेतना' पत्रिका के अंकुरित, पलवित और पुष्पित होने से जुड़े सवाल पूछे हैं। तेजेंद्र शर्मा ने साहित्य की विविध विधाओं में सृजन किया है। वे प्रमुख रूप में कवि और कथाकार हैं। लेखिका ने उनकी रचना प्रक्रिया, चरित्र सृष्टि, सृजनशीलता की परिपक्वता, लेखनी में टर्निंग पांइट, स्त्री विमर्श, नारी आंदोलन भारतीय हिंदी कहानी की स्थिति, साहित्यिक गुटबंदी और बाज़ारवाद, प्रवासी लेखन से जुड़े सवाल पूछे हैं। इन संदर्भों में उनकी सारगर्भित टिप्पणियां आकर्षित

करती हैं। उषा राजे सक्सेना कवयित्री और कहानीकार हैं। उन्होंने निबंध भी लिखे हैं और सम्पादन का भी अनुभव है। वे लेखन में सामाजिक बोध को बहुत आवश्यक मानती हैं। लेखक और पाठक दोनों समाज के अंग हैं। एक के बिना दूसरे का अस्तित्व नहीं है। अचला शर्मा यह मानती हैं कि हम अपने समय और परिवेश की अवहेलना नहीं कर सकते। अर्चना पैन्यूली डेनमार्क के गिने-चुने कथाकारों में से हैं। उनका 'वेयर डू आई बिलाना' उपन्यास बहुत चर्चित रहा है। उन्हें राष्ट्रकवि प्रवासी साहित्यकार से भी सम्मानित किया गया है। सुधा जी ने इस उपन्यास के कथ्य और शिल्प पर विचारों को साझा किया है। कथा साहित्य की समकालीनता पर भी विचार व्यक्त किए गए हैं। सुरेश शुक्ल 'शरद आलोक' नार्वे से स्पाइल पत्रिका निकालते हैं। नार्वे में हिंदी की स्थिति, प्रवासी साहित्यकार कहलाना कैसा लगता है, साहित्यिक गुटबंदियों सम्बंधी प्रश्नों के उत्तर इनके साक्षात्कार में उपलब्ध हैं। पूर्णिमा वर्मन मानती हैं कि हिंदी में इंटरनेट पर अभी बहुत काम करना है। कवि एवं कथाकार कृष्ण बिहारी 'निकट' पत्रिका के सम्पादक हैं। विचारधारा और रचना के सम्बंध, साहित्यिक गुटबंदियों और बाज़ारवाद पर उनके विचार साक्षात्कार में प्रमुख रूप में उभरे हैं। एस.आर. हरनोट उपन्यासकार, कहानीकार और यात्रा वृतांत लेखक हैं। उनका मानना है कि रचना में प्रयोगों पर अधिक ध्यान रचना का मूल समाप्त कर देता है। वे प्रवासी शब्द का प्रयोग विदेशों में रह रहे भारतीय लेखकों के लिए उपयुक्त नहीं समझते। रामेश्वर काम्बोज 'हिमांशु' की लघु कथा लेखन में अधिक रुचि रही हैं। इस विधा में उनकी बहुत-सी कृतियां हैं। सुधा जी ने लघु कथा लेखन पर उनका साक्षात्कार केंद्रित रखा है। पुस्तक के अंत में कंचन सिंह चौहान ने सुधा ओम ढींगरा का साक्षात्कार लिया है। यह अपने आपमें इस पुस्तक की नवीनता है। इस विस्तृत साक्षात्कार में कंचन सिंह चौहान ने सुधा जी के प्रारम्भिक जीवन के संघर्ष से लेकर सृजनशीलता तक के सफर के अनेक पड़ाव विवृत किए हैं जो पाठक को भावविभोर, प्रेरित और आकर्षित करते हैं। सुधा जी ने साक्षात्कार विधा की परम्परा को ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्य में प्रस्तुत किया है, एक साक्षात्कारकर्ता को किस प्रकार पूर्व तैयारी के साथ इस विधा में अग्रसर होना चाहिए तथा किस प्रकार के गुण और विशिष्टता अपेक्षित होती है, इसे भी इस सम्वाद में व्यक्त किया है। सुधा ओम ढींगरा ने प्रत्येक साक्षात्कार से पूर्व प्रत्येक रचनाकार का जीवन परिचय दिया है जिससे उनके जीवन-वृत्त और कृतित्व सम्बंधी जानकारी पाठक को मिल जाती है। साक्षात्कार प्रारम्भ करने से पहले लेखिका ने प्रत्येक रचनाकार के व्यक्तित्व के आंतरिक और बाह्य पक्षों, उनसे भेंट करने या सम्वाद करने के संस्मरणात्मक अनुभवों नितांत काव्यात्मक और चित्रात्मक भाषा में मूर्तिमान किया है। इस अवसर पर प्रस्तुत उनकी टिप्पणियों में लेखिका की आलोचनात्मक और सृजनात्मक दृष्टि का बोध होता है। इन साक्षात्कारों में सुधा जी ने वैश्विक रचनाकारों के साहित्य सृजन, सृजन की प्रेरणा और रचनाशीलता की प्रासंगिकता सम्बंधी विविध पक्षों के उद्घाटन में जिस दक्षता और पूर्व तैयारी का परिचय दिया है, यह इस पुस्तक की उपलब्धि है। साक्षात्कार के लिए प्रस्तुत प्रश्नों की क्रमबद्धता, प्रासंगिकता, स्पष्टता और परिपक्वता इसके प्रमाण हैं। मारिशस, जर्मनी आदि देशों में प्रवासी हिंदी साहित्य पर्याप्त समृद्ध है। कुछ ऐसे देशों के रचनाकार भी इसमें सम्मिलित होते तो पुस्तक की अर्थवत्ता और अधिक बढ़ जाती। निश्चित रूप में इस क्रम में द्वितीय खंड इस कमी को पूरी करेगा। यह निर्विवाद कहा जा सकता है कि सुधा ओम ढींगरा द्वारा लिए गए ये साक्षात्कार वैश्विक रचनाकारों की रचनाभूमि के दस्तावेज हैं।

पुस्तक का नाम :	वैश्विक रचनाकार : कुछ मूलभूत जिज्ञासाएं (साक्षात्कार)
लेखिका :	सुधा ओम ढींगरा
प्रकाशक :	शिवना प्रकाशन, पी.सी. लैब सम्राट कॉम्पलैक्स बेसमेंट, बस स्टैंड, सीहोर, मध्य प्रदेश-466 001
पहला सजिल्द संस्करण :	2013
मूल्य :	250 रुपये

बातल अर्की, जिला सोलन, हिमाचल प्रदेश-173 208, मो. 94180 10646